16

गुमनामी का काल

यरदन से लौटने से लेकर गलील में वापसी तक (यूहन्ना 1:29-4:54)

इस काल की विशेष बातें। -इस काल में नौ या दस महीने अर्थात जाड़े के अंत से जाड़े के आरम्भ तक का समय आता है। इस काल की केवल कुछ ही बातें लिखित रूप में मिलती हैं। इस कारण, और इस तथ्य के आधार पर कि यीशु लोगों में धीरे-धीरे प्रकट हुआ, इसे गुमनामी का काल कहा जाता है। यीशु का यह समय सम्भवत: यहूदियों के बीच ही बीता, इस कारण जो भी हम थोड़ा बहुत जानते हैं उसके लिए यूहन्ना के ऋणी हैं। यह वर्ष आश्चर्य के काम करने की अपनी शिक्षा देने और लोगों में उपदेश देने के बजाय निजी और व्यक्तिगत शिक्षा का था। यूहन्ना की सेवकाई चलती रही, यद्यपि यह यीशु के काम की बढ़ती सामर्थ के सामने फीकी पड़ने लगी थी (यूहन्ना 4:1-3)। इस काल के प्रारम्भिक वर्ष गलील में परन्तु अधिकतर समय यहूदिया में ही बीता था।

I. गलील में प्रारम्भिक सेवकाई

1. प्रारम्भिक चेले। -परीक्षा के बाद यीशु युग बदलने वाली अपनी सेवकाई में प्रवेश करने के लिए यरदन की ओर चला गया। वहां उसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने परमेश्वर का मेमना कहा। पांच युवक जो यूहन्ना के चेले थे, कुछ तो यूहन्ना की गवाही से परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि उससे भी बढ़कर यीशु की अपनी शिक्षा और व्यक्तित्व से उसके चेले बनने के लिए आ गए। यूहन्ना के चेले इकट्ठे होकर यीशु के पास नहीं गए; बल्कि इस काल में यीशु बढ़ता रहा और यूहन्ना घटता रहा; क्योंकि उस महान अग्रदूत के लिए ऐसा ही तय होना था (यूहन्ना 3:25-30)। इन पहले पांच चेलों के नाम भुलाए नहीं जाने चाहिए। उनके नाम हैं यूहन्ना, अंद्रियास, पतरस, फिलिप्पुस, और नतनएल।

2. पहला आश्चर्यकर्म। -यीशु तुरन्त गलील में थोड़ी देर के लिए जाने के लिए अपने नये चेलों को लेकर यरदन के निचले इलाके में गया। अवसर वहां नासरत के निकट काना में एक विवाह का था। यहां वह अपनी मां से मिला, और उन अद्‌भुत कामों में से पहला काम किया जिसे हम आश्चर्यकर्म कहते हैं। खुले मन से मेहमान नवाज़ी करना पूर्व के लोगों की विशेषता है; और यीशु ने पानी की मय बनाकर समारोह पर छाई उदासी दूर कर दी।

''सचेत जल अपने प्रभु को देखकर लाल हो गया।''

आश्चर्यकर्म तो आश्चर्यकर्म ही होता है। इसे दार्शनिक ढंग से प्रस्तुत करने की कोशिश करना व्यर्थ है। प्रकृति की सामान्य प्रक्रियाओं की तरह ही हमें इसकी भी बहुत कम समझ है। यीशु स्वयं सब आश्चर्यकर्मों से बड़ा अर्थात संसार का एक नैतिक आश्चर्यकर्म करने वाला था। जो बात हमारे लिए अलौकिक है वह यीशु के लिए स्वाभाविक थी। जैसे परमेश्वर सृष्टि की कुंजी है वैसे ही यीशु अपने कामों की कुंजी है।

3. गलील की सेवकाई की समाप्ति। –यीशु अपनी मां और चेलों के साथ, कफ़रनहूम में गया, जिसे उसने बाद में गलील की अपनी सेवकाई का केन्द्र बना लिया। वहां से वह राष्ट्रीय राजधानी यरूशलेम में गया। इस प्रकार गलील की प्रारम्भिक सेवकाई पूरी हो जाती है। इसका इतिहास तो बहुत संक्षेप में है, परन्तु इसमें यूहन्ना की सेवकाई की दो दिलचस्प तुलनाएं अवश्य मिलती हैं: (1) यीशु ने आश्चर्यकर्म करने वाला होना था; (2) वह जन साधारण के सामान्य जीवन में घुल-मिल गया था। यूहन्ना एकांतवासी था जो मनुष्यों के निवास को त्यागकर, जंगल में प्रचार करता था। वह जो मनुष्यजाति को छुड़ाने के लिए आया था हर वर्ग के लोगों से घुल-गुल मिल गया, उसने धनी लोगों की मेहमाननवाजी स्वीकार की, निर्धनों के घरों में गया, आराधनालय और लोगों के घरों में, उजाड़ जंगल में और देश के व्यस्त समुद्री तट पर, भीड़ भरे चौक में और भव्य राजधानी में शिक्षा देता था।

II. यहूदिया में प्रारम्भिक सेवकाई

1. परिचय। –गलील में यीशु की सेवकाई स्पष्टतया एक निजी तरह की थी जिसमें उसका उद्देश्य मुख्यत: अपने चेलों में विश्वास दृढ़ करना था (यूहन्ना 2:11)। अब वह अपनी सेवकाई के सार्वजनिक चरण में राष्ट्रीय राजधानी में प्रवेश करता है। इस प्रकार यहूदिया, यरूशलेम और देश के हाकिमों को उसे मसीह के रूप में मानने का अवसर पहले दिया जाता है। जब तक *उन्होंने* उसे ठुकराया नहीं तब तक वह गलील में ही सुसमाचार देता रहा।

2. मन्दिर को शुद्ध करना। –आत्मिक आराधना और जीवन की शुद्धता के लिए लगन पुराने नबियों की विशेषता थी। युवा नबी यरूशलेम में इसी जोश के साथ अपना काम आरम्भ करता है। हज़ारों लोगों के बलिदान से मन्दिर का आंगन पशुओं के बाड़े में बदल गया था; क्योंकि दलाल मन्दिर के आंगनों में ही ग्राहकों से सौदा करते थे। इस अधिकार के साथ, जो नैतिक मान्यताओं पर आधारित था, यीशु ने मन्दिर से पशुओं और व्यापारियों को निकाल दिया।[1] स्वार्थी हाकिमों में उसके इस साहसिक कदम से उसके प्रति कोई सहानुभूति नहीं जागी। बल्कि इससे उसके प्रति उनकी घृणा ही बढ़ी। राजधानी में ठुकराए जाने के बाद, वह यहूदिया के छोटे जिलों की ओर चला गया।

3. निकुदेमुस के साथ वार्तालाप। –नगर में ठहरने के समय यीशु ने कुछ आश्चर्यकर्म करके अपने मसीहा होने की बात पर मुहर लगा दी थी (यूहन्ना 2:23; 3:2; 4:45)। हाकिमों में से कम से कम एक, निकुदेमुस नामक फरीसी था, जिसे अपने पद का घमण्ड नहीं था। युवा गुरु के पास रात को उसका आना हमें यीशु के मुंह से निकला अपने राज्य के

आत्मिक स्वभाव का सबसे बड़ा रहस्य बताता है।[2]

4. देश में सेवकाई: यूहन्ना की अंतिम गवाही। –जैसा कि हमने देखा, नगर से निकाले जाने के बाद यीशु सेवकाई के लिए यहूदिया में चला गया (यूहन्ना 3:22)। ऐसी किसी घटना का इतिहास तो नहीं मिलता; परन्तु यूहन्ना 4:35 से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि यीशु यहूदिया में आठ महीने तक रहा। यूहन्ना के चेलों की ईर्ष्या से उसकी फलदायक और बढ़ रही सेवकाई का पता चलता है (यूहन्ना 3:26)। सेनापतियों की ईर्ष्या बहुत से युद्धों का कारण बनती थी। यूहन्ना अलग सांचे में ढाला गया था और उसके चेलों की स्वाभाविक ईर्ष्या उसकी और मसीहा के प्रति उसकी अंतिम श्रद्धांजलि को दोहराने के लिए एक अवसर थी, जिसके आगे उसका घटना आवश्यक था।

5. यहूदिया में प्रारम्भिक सेवकाई का समाप्त होना। –फरीसियों ने यूहन्ना को नकार दिया था (यहूदा 7:30)। वे यीशु की उससे अधिक सफलता और आत्मिकता के और भी विरोधी थे। फरीसियों का यह विरोध सम्भवत: यूहन्ना के चेलों की ईर्ष्या, और सबसे बढ़कर यूहन्ना का बंदी बनाया जाना, यीशु के यहूदिया से गलील में चले जाने का कारण बना (*तु.* यूहन्ना 4:1–3; मत्ती 4:1–12)।

6. सामरी स्त्री। –सामरिया यहूदिया और गलील के बीच पड़ता था जिसमें ठुकराए हुए लोग रहते थे। यहूदी प्राय: यरदन के पूर्व की ओर जाते हुए इस इलाके में से जाने से परहेज़ करते थे। परन्तु यीशु तो पहले ही यहूदिया में उत्तर की ओर काफी दूर था; इससे भी अधिक, राष्ट्रीय पूर्व धारणा का *उस पर* कोई असर नहीं हो सकता था। यूहन्ना ने सामरी स्त्री के साथ उसके वार्तालाप को दर्ज किया है। उसके जीवन और बातों और काम के अद्भुत प्रकाश से पहले ही यूहन्ना, अंद्रियास, पतरस और लाखों अन्य लोग प्रभावित हो चुके हैं; परन्तु यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि उसके मसीहा होने की सबसे पहली और सबसे अलग स्वीकृति एक अनाम और बाहरी जाति की स्त्री के द्वारा हुई।

पाद टिप्पणियां

[1]यीशु की सेवकाई के प्रथम फसह के समय मन्दिर को शुद्ध करने की बात बाद में अंतिम फसह के समय शुद्ध करने के साथ न मिलाई जाए (तु. मत्ती 21:12)। [2]सामान्यतया कहा जाता है कि निकुदेमुस यहूदियों के भय से रात को आया। इसकी सम्भावना तो है परन्तु अपेक्षा नहीं। हम उसके विषय में जो थोड़ा बहुत जानते हैं वह उसके पक्ष में अधिक है (तु. यूहन्ना 7:50; 19:39)। इस बात की अधिक सम्भावना है कि वह रात के समय बातचीत में किसी प्रकार की बाधा से बचने के लिए आया होगा।